

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 295, नई दिल्ली, गुरुवार 25 दिसम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

जब तक सांस है, तब तक संघर्ष है, और जब तक संघर्ष है, तब तक उम्मीद है।

03 महामुजुंजय मंत्र की वैज्ञानिक शक्ति को जाने और जीवन सफल बनाए 06 भारतीय शिक्षा प्रणाली 2026: एक परिवर्तन गाइड 08 लांजीबेरना में कृषि भूमि नष्ट किए जाने पर अल्टीमेटम

समाप्त लाइसेंस पर पिछली तारीख से मान्यता नहीं: सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला

संजय कुमार बाठला



अब यदि आपके ड्राइविंग लाइसेंस की वैधता में एक दिन का भी अंतराल है, तो पुलिस और अग्निशमन सेवाओं में ड्राइवर की नौकरी का रास्ता बंद हो सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया है कि लाइसेंस की अवधि खत्म होने के बाद उसका नवीनीकरण पिछली तारीख से प्रभावी नहीं माना जाएगा और ऐसी स्थिति में "लगातार दो वर्ष" तक लाइसेंस रखने की पात्रता शर्त पूरी नहीं मानी जाएगी।

लगातार दो साल का मतलब क्या? सुप्रीम कोर्ट ने तेलंगाना राज्य स्तरीय पुलिस भर्ती बोर्ड (TSLPRB) की व्याख्या को सही ठहराते हुए कहा है कि जिन अभ्यर्थियों के ड्राइविंग लाइसेंस की अवधि बीच में समाप्त हो गई और बाद में अंतराल के साथ नवीनीकृत हुआ, वे "लगातार" लाइसेंस रखने की शर्त पर खरे नहीं उतरते। अंतराल ने स्पष्ट किया कि पुलिस और अग्निशमन विभाग में ड्राइवर पदों के लिए अभ्यर्थी के पास भर्ती अधिसूचना की तिथि तक पूरे दो वर्षों की अवधि में बिना किसी रुकावट के वैध ड्राइविंग लाइसेंस होना अनिवार्य है। जस्टिस अहसानुद्दीन अमानुल्लाह और जस्टिस एस. वी. एन. भट्टी की खंडपीठ ने कहा कि "लगातार" शब्द का सामान्य अर्थ है—बिना किसी व्यवधान, बिना किसी अंतराल के।

लाइसेंस की समाप्ति और नवीनीकरण के बीच चाहे एक दिन का ही अंतराल क्यों न हो, वह इस निरंतरता को तोड़ देता है और अभ्यर्थी आवश्यक पात्रता से बाहर हो जाता है।

केस की पृष्ठभूमि: तेलंगाना पुलिस भर्ती तेलंगाना राज्य स्तरीय पुलिस भर्ती बोर्ड ने अप्रैल-मई 2022 में पुलिस कॉन्टेक्ट (ड्राइवर) और फायर सर्विसेज में ड्राइवर ऑपरैटर के कुल 325 पदों के लिए भर्ती अधिसूचनाएं जारी की थीं। पात्रता की प्रमुख शर्तों में से एक यह थी कि उम्मीदवार के पास अधिसूचना की तिथि तक कम से कम दो वर्षों से "लगातार" वैध एलएमवी/एएमवी

वैधता को एक दिन के लिए भी बढ़ाता हो। जब तक नवीनीकरण नहीं हो जाता, उस अवधि में चालक को वाहन चलाने की कानूनी अनुमति नहीं रहती। इस तरह समाप्ति और नवीनीकरण के बीच का समय एक कानूनी अक्षमता (legal disability) की अवधि है, जो "लगातार" होने की शर्त को स्वतः भंग कर देती है।

ड्राइविंग: कागजी लाइसेंस से आगे की कौशल, सुप्रीम कोर्ट ने यह भी रेखांकित किया कि ड्राइविंग केवल कागज पर दर्ज योग्यता या लाइसेंस नंबर पर नहीं है, बल्कि यह व्यावहारिक कौशल और नियमित अभ्यास से जुड़ा हुआ क्षेत्र है। अदालत ने कहा कि पुलिस, अग्निशमन सेवा या आपदा प्रबंधन जैसे संवेदनशील क्षेत्रों में ड्राइवरों से अपेक्षा होती है कि वे कठिन, आपातकालीन और जोखिमपूर्ण परिस्थितियों में भी दक्षतापूर्वक वाहन संचालन कर सकें। ऐसी परिस्थितियों में नियमित अभ्यास और लगातार अनुभव अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि किसी अवधि के दौरान व्यक्ति के पास कानूनी रूप से वैध लाइसेंस ही नहीं था, तो यह मान लेना कि उस समय भी उसका अनुभव "निरंतर" बना रहा, न व्यावहारिक दृष्टि से उचित है, न ही कानूनी रूप से स्वीकार्य। इसीलिए

अदालत ने "लगातार" शब्द को केवल औपचारिक शर्त नहीं, बल्कि सुरक्षा, दक्षता और सार्वजनिक हित से जुड़ी वास्तविक कसौटी के रूप में समझने पर बल दिया।

अभ्यर्थियों के लिए संदेश और आगे का रास्ता फैसले के परिणामस्वरूप वे सभी अभ्यर्थी, जिनके ड्राइविंग लाइसेंस में अधिसूचना से पहले की प्रासंगिक दो वर्षों अवधि के दौरान समाप्ति और नवीनीकरण के बीच कोई भी अंतराल रहा, भर्ती के लिए अयोग्य माने जाएंगे, भले ही नवीनीकरण कानूनी समय-सीमा के भीतर ही क्यों न किया गया हो। भर्ती बोर्ड को निर्देश है कि वह "लगातार दो वर्ष" की शर्त को इसी कठोर अर्थ में लागू करते हुए चयन प्रक्रिया पूरी करे।

यह निर्णय युवाओं और नौकरी के इच्छुक अभ्यर्थियों के लिए एक साफ संदेश है कि ड्राइविंग लाइसेंस जैसी बुनियादी पात्रता को लेकर लापरवाही अब केवल ट्रैफिक चालान तक सीमित परिणाम नहीं लाएगी, बल्कि सरकारी नौकरियों के अवसर भी खो सकती है। ऐसे में समय पर लाइसेंस नवीनीकरण और उसकी वैधता में एक भी दिन का अंतराल न आने देने की जिम्मेदारी अभ्यर्थी पर ही है।

वित्त मंत्रालय राजस्व विभाग, भारत सरकार केन्द्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा 23 दिसंबर, 2025 को जोखिम विश्लेषण के माध्यम से संभावित रूप से अपात्र पाए गए कटौती/छूट दावों की स्वैच्छिक समीक्षा के लिए करदाताओं को प्रोत्साहित करने की पहल की

संजय कुमार बाठला

1. यह देखा गया है कि कुछ करदाताओं ने उन कटौतियों या छूटों का लाभ उठाकर अपात्र रिफंड का दावा किया है जिनके वे हकदार नहीं हैं, जिसके परिणामस्वरूप आय कम दिखाई गई है।

2. जोखिम प्रबंधन ढांचे के अंतर्गत और उन्नत डेटा विश्लेषण के उपयोग से, आकलन वर्ष (AY) 2025-26 के मामलों की पहचान की गई है। इस ढांचे में ऐसे मामले शामिल हैं जहां पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों (RUPPs) को फर्जी दान और अन्य अपात्र कटौतियों या छूटों का दावा आयकर रिटर्न (ITR) में किया गया प्रतीत होता है। यह भी देखा गया है कि कुछ मामलों में दान प्राप्तकर्ताओं के गलत या अमान्य पैन पते दिए गए हैं। कुछ मामलों में दावा की गई कटौती या छूट की सीमा से संबंधित त्रुटियां भी हैं।

3. "गैर-हस्तक्षेपकारी डेटा उपयोग मार्गदर्शन और सक्षम बनाना (NUDGE)" अभियान के तहत चिन्हित करदाताओं से एसएमएस और ईमेल के माध्यम से अनुरोध किया जा रहा है कि वे संशोधित आयकर रिटर्न (आईटीआर) दाखिल करने की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2025 को देखते हुए ऐसी त्रुटियों को सुधारें। यह पहल कर प्रशासन के प्रति विश्वास-ग्रन्थम दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसके तहत करदाताओं को अपने आयकर रिटर्न (आईटीआर) की समीक्षा करने और जहां आवश्यक हो, किसी भी अपात्र दावे को स्वेच्छा से सुधारने का अवसर प्रदान किया जाता है। यह अभियान डेटा विश्लेषण और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर एक पारदर्शी, गैर-हस्तक्षेपकारी और करदाता-केंद्रित अनुपालन वातावरण को सक्षम बनाता है, जिसमें मार्गदर्शन और स्वैच्छिक अनुपालन पर जोर दिया गया है।

4. वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान, 21 लाख से अधिक करदाताओं ने मूल्यांकन वर्ष 2021-22 से 2024-25 के लिए अपने आयकर रिटर्न (आईटीआर) को अपडेट कर लिया है और 2,500 करोड़ रुपये से अधिक का कर भुगतान किया है। इसके अतिरिक्त, चालू मूल्यांकन वर्ष, यानी मूल्यांकन वर्ष 2025-26 के लिए 15 लाख से अधिक आयकर रिटर्न (आईटीआर) को संशोधित किया जा चुका है।

5. संबंधित करदाताओं को सलाह दी जाती है कि वे अपने आयकर रिटर्न की समीक्षा करें, अपने कटौती और छूट के दावों की सत्यता की पुष्टि करें और यदि आवश्यक हो तो 31 दिसंबर 2025 तक

Government of India
Ministry of Finance
Department of Revenue
Central Board of Direct Taxes

New Delhi, 23rd December, 2025
Press Release

Initiative to encourage taxpayers to voluntarily review deduction/exemption claims identified as potentially ineligible through risk analytics

It has been observed that certain taxpayers have claimed ineligible refunds by availing deductions or exemptions to which they are not entitled, resulting in understatement of income.

2. Under the risk management framework, and through the use of advanced data analytics, cases for Assessment Year (AY) 2025-26 have been identified. The framework includes instances where bogus donations to Registered Unrecognised Political Parties (RUPPs) and other ineligible deductions or exemptions appear to have been claimed in the Income-tax Returns (ITRs). It has also been observed that, in some cases, either incorrect PANs or invalid PANs of donees have been quoted. Some cases also contain errors relating to the extent of deduction or exemption claimed.

3. Identified taxpayers are being requested through SMS and email under the "Non-intrusive Usage of Data to Guide and Enable (NUDGE)" campaign to correct such errors, in view of the due date for filing revised ITRs by 31 December 2025. This initiative reflects a trust-first approach to tax administration, under which taxpayers are provided an opportunity to review their Income-tax Returns (ITRs) and voluntarily correct any ineligible claims, wherever required. The campaign leverages data analytics and technology to enable a transparent, non-intrusive, and taxpayer-centric compliance environment, with an emphasis on guidance and voluntary compliance.

4. During FY 2025-26, more than 21 lakh taxpayers have already updated their ITRs for AYs 2021-22 to 2024-25 and paid more than ₹2,500 crore in taxes. In addition, more than 15 lakh ITRs have already been revised for the current assessment year, i.e., AY 2025-26.

5. It is advised that the concerned taxpayers review their ITRs, verify the correctness of their deduction and exemption claims, and revise their returns, if required, within the prescribed time by 31 December 2025, so as to avoid further enquiries in the matter.

6. Taxpayers whose deduction or exemption claims are genuine and correctly made in accordance with law are not required to take any further action.

7. It is clarified that taxpayers who do not avail of this opportunity may still file an updated return from 1 January 2026, as permitted under law, subject to payment of additional tax liability.

(V. Rajitha)
Commissioner of Income Tax
(Media & Technical Policy) &
Official Spokesperson, CBDT

निर्धारित समय सीमा के भीतर अपने रिटर्न में संशोधन करें, ताकि इस मामले में आगे की पूछताछ से बचा जा सके।

6. जिन करदाताओं के कटौती या छूट के दावे वास्तविक हैं और कानून के अनुसार सही ढंग से किए गए हैं, उन्हें आगे कोई कार्रवाई करने की आवश्यकता नहीं है।

7. यह स्पष्ट किया जाता है कि जो करदाता इस

अवसर का लाभ नहीं उठाते हैं, वे कानून के अनुसार, अतिरिक्त कर देयता का भुगतान के अधीन, 1 जनवरी 2026 से अद्यतन रिटर्न दाखिल कर सकते हैं।

(वी. राजिता)
आयकर आयुक्त (मीडिया एवं तकनीकी नीति) और आधिकारिक प्रवक्ता, सीबीडीटी

"सीमा पार हमला" की अफवाहें बेबुनियाद, बांग्लादेश में आंतरिक अशांति ही असली वजह

संगिनी घोष, विशेष संवाददाता दिल्ली

हाल के दिनों में सोशल मीडिया और मैसेजिंग प्लेटफॉर्म पर यह दावा तेजी से फैलाया जा रहा है कि "बांग्लादेश ने सीमा पार कर दी है" और बांग्लादेशी सेना ने किसी पड़ोसी देश में घुसकर सात ठिकानों को तबाह कर दिया है। लेकिन मौजूदा और विश्वसनीय समाचार रिपोर्टों की जांच से साफ होता है कि इन दावों का कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है। किसी भी पड़ोसी देश के खिलाफ बांग्लादेशी सेना द्वारा किसी सैन्य घुसपैट, सीमा पार हमले या बड़े सैन्य अभियान को पुष्टि नहीं हुई

है। वास्तव में, बांग्लादेश इस समय आंतरिक अशांति के दौर से गुजर रहा है और इसके साथ-साथ भारत-बांग्लादेश सीमा पर सामान्य लेकिन कभी-कभी तनावपूर्ण सीमा सुरक्षा घटनाएँ सामने आ रही हैं।

बांग्लादेश में राजनीतिक और सामाजिक तनाव बढ़ा हुआ है, खासकर अहम राजनीतिक घटनाओं से पहले। ढाका और अन्य क्षेत्रों में हिंसा की कुछ घटनाएँ सामने आई हैं, जिनमें राजनीतिक कार्यकर्ताओं और अल्पसंख्यक समुदायों को निशाना बनाए जाने की खबरें भी शामिल हैं। वहीं



दूसरी ओर, भारत और बांग्लादेश की सीमा पर घटनाएँ हुई हैं, जैसे तस्करो का पीछा करते हुए अज्ञान में सीमा पार हो जाना, कुछ समय के लिए

हिरासत में लेना या अवैध रूप से सीमा पार करने वालों को वापस भेजना। ऐसी घटनाओं को दोनों देशों के बीच स्थापित सैन्य और कूटनीतिक प्रक्रियाओं के तहत सुलझाया जाता है और इन्हें युद्ध या सैन्य आक्रमण नहीं माना जाता।

दोनों देशों के अधिकारियों ने हालात को बिगड़ने से रोकने के लिए आपसी संवाद बनाए रखा है और वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों ने पड़ोसी देशों को यह भरोसा दिलाया है कि किसी विदेशी संपत्ति को नुकसान नहीं पहुंचाया गया है और न ही कोई आक्रामक सैन्य इरादा है। विशेषज्ञों का मानना है

कि "सात ठिकानों को तबाह करने" जैसी बातें सोशल मीडिया पर फैली गलत जानकारी या बड़ा-चढ़ाकर पेश की गई अफवाहें हैं, जो बांग्लादेश के आंतरिक सुरक्षा अभियानों या अलग-अलग घटनाओं को गलत तरीके से जोड़कर पेश की जा रही हैं। फिलहाल, अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय मीडिया की पुष्टि के अनुसार, बांग्लादेश भले ही आंतरिक चुनौतियों और कूटनीतिक संवेदनशीलता का सामना कर रहा हो, लेकिन किसी भी पड़ोसी देश की संपत्ति का उल्लंघन करने वाले सैन्य हमले का कोई सबूत नहीं है।

टैपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com
tolwadelhi@gmail.com



पिंकी कुंडू

यंजब के एक सेवानिवृत्त आईपीजी ने नकली निवेश योजना में ₹8.10 करोड़ नंगाए और आलस्य का प्रयास किया।

आज के साइबर सुरक्षा विचार शृंखला में हमने पहले भी बताया था कि बंगलुरु के एक वरिष्ठ नागरिक (₹1.33 करोड़ की संपत्ति) और कानपुर के डॉक्टर इसी तरह के घोटालों का शिकार हुए। बंगलुरु वाले नामले में भरवपूर्ण बात यह थी कि यह घोटाले में वे एक मेनेजमेंट कंपनी का प्रतिनिधि बनकर की गई थी।

आज का साइबर सुरक्षा विचार (26/11/2025) बंगलुरु के 74 वर्षीय व्यक्ति ने ₹1.33 करोड़ नंगाए, जिनके घोटाले में वे खुद को देखा मेनेजमेंट कंपनी का प्रतिनिधि बताकर उन्हें निवेश के लिए फुसलाया। यह घटना दर्नाक वाद दिलाती है कि कैसे घोटाले में अज्ञान, तकनीक और आर्थिक आकांक्षाओं का शोषण करते हैं—विशेषकर वरिष्ठ नागरिकों के बीच।

आज का साइबर सुरक्षा विचार (08/12/2025) भारत भर में कई पेशेवर—जिनमें रिटर्नवॉल्यूम, कानपुर और अन्य शहरों के डॉक्टर शामिल हैं—घोटाले में निवेश योजनाओं

आज का साइबर सुरक्षा विचार "आईपीएस अधिकारी भी साइबर फ्रॉड के शिकार बने।"

का शिकार हुए हैं। जैसे-जैसे वे घोटाले बढ़ रहे हैं, किसी भी निवेश अवसर को पैसे लगाने से पहले पूरी तरह सत्यापित करना और किसी भी सौदेख्य गतिविधि की तुरंत राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल पर शिकायत करना आवश्यक है।

एन दोस्तों के: "High Returns - High Risk. निवेश से पहले सत्यापन करें!"

क्यों वे अपराध गरी रहते हैं?

- नकली वेबसाइट, व्हाट्सएप कॉल और प्रतिस्पर्धा की बातें
- वरिष्ठ नागरिकों और पेशेवरों को मानवतात्मक रूप से निशाना बनाना
- VoIP, मूल्य क्रांति और सीमा-पार मुनाफा का उपयोग
- शर्म और डर के कारण डेर से रिपोर्टिंग, जिससे अपराधी बच निकलते हैं
- घोटाले तेजी से बदलते हैं—लॉटरी से लेकर क्रिप्टो, सेक्सटोर्न और नकली ऐप तक इस प्रकार को रोकने के वास्तविक उपाय
- 1. प्रणालीगत और नियामक हस्तक्षेप
- SEBI/RBI को वित्तीय ऐप का सत्यापन कर "विश्वसनीय रजिस्ट्री" प्रकाशित करनी चाहिए
- बैंकों को नए खातों में बड़े ट्रांसफर पर एआई आधारित अलर्ट लगाना चाहिए
- दूरसंचार कंपनियों को अप्रमाणित व्हाट्सएप विज्ञापन नंबर पर रोक लगानी चाहिए



- नागरिक जागरूकता और सशक्तिकरण
- RWAs, बैंकों और प्रत्येक में साइबर सुरक्षा अभियान
- सरल चेकलिस्ट:
 - अनजाने निवेश प्रस्तावों पर भरोसा न करें
 - SEBI/RBI पोर्टल पर कंपनी सत्यापित करें
 - अज्ञात लिंक से ऐप डाउनलोड न करें
 - 1930 हेल्पलाइन और cybercrime.gov.in का प्रयोग
- तकनीकी सुरक्षा उपाय
 - सॉल्यूशन डोमेन पर ब्राउज़र वेतावनी
 - धोखाधड़ी खातों का तैयारी से हटाना
 - वरिष्ठ नागरिकों के लिए डिजिटल साक्षरता ऐप
 - 4. समुदाय और परिवार की भूमिका
 - परिवार बुजुर्गों के बड़े लेन-देन पर निगरानी रखें
 - RWAs "Cyber Safety

- Circles" बना सकते हैं
- बैंक कर्मचारी धोखाधड़ी रोकने में अलग भूमिका निभा सकते हैं
 - 5. कानून प्रवर्तन और सत्यापन
 - वरिष्ठ नागरिक धोखाधड़ी के लिए समर्पित साइबर अपराध इकाई
 - सॉल्यूशन खातों को तुरंत फ्रीज करना
 - धोखाधड़ी डोमेन का सार्वजनिक नामकरण व्यावहारिक नामिक सुरक्षा उपाय
 - STOP - अज्ञात लिंक पर क्लिक करने से पहले रुकें
 - CHECK - SEBI/RBI पंजीकरण सत्यापित करें
 - CALL - केवल आधिकारिक हेल्पलाइन का उपयोग करें, व्हाट्सएप नहीं
 - REPORT - 1930 पर कॉल करें या cybercrime.gov.in पर रिपोर्ट करें
 - पेशेवरों के लिए साइबर सुरक्षा अलर्ट
 - भारत में डॉक्टर, वकील और अधिकारी लगातार निशाना बनाए जा रहे हैं।
 - धोखाधड़ी नकली नाम, व्हाट्सएप समूह और तात्कालिक दबाव का उपयोग करते हैं।
 - खत के मामले स्थान पीठित धोखाधड़ी प्रकारसभ
 - बंगलुरु वरिष्ठ नागरिक के तथ मनेजमेंट ₹1.33 करोड़
 - तिरुवनंतपुरम डॉक्टर न क ली टैडिन वोटवॉर्म ₹1.11 करोड़

- * उद्यमपर क्लिन निवेश ₹30 करोड़
- * तेलंगाना डॉक्टर न क ली ₹2.51 करोड़
- * कानपुर धोखाधड़ी कई डॉक्टर नि वे श भरी नुकसान
- * क्रिप्टो स्कैम डॉक्टर ि क टो निवेश ₹1.1 करोड़
- सामान्य पेटर्न
 - पेशेवरों को आर्थिक रूप से स्थिर माना जाता है
 - समय की कमी - कम सत्यापन
 - धोखाधड़ी नकली नाम और साधियों का दबाव इस्तेमाल करते हैं
 - निवेश से पहले सत्यापन के कदम
 - SEBI/RBI पंजीकरण जांचें
 - ऑनलाइन शिकायतें और समीक्षाएं देखें
 - विश्वसनीय वित्तीय सलाहकार से परामर्श करें
 - सभी लेन-देन का रिकॉर्ड रखें
 - पेशेवरों के लिए कार्य योजना
 - समूहों में टिप्पणी सलाह साझा करें
 - गोपनीय रिपोर्टिंग को प्रोत्साहित करें
 - अज्ञात लिंक, फर्जी और कंपनियों में साइबर सुरक्षा कार्रवाई और अप्रमाणित करें
 - ज्ञात घोटालों की सूची बनाए रखें
 - निर्कर्म निवेश धोखाधड़ी एक बढ़ती हुई साइबर अपराध लहर है। आइए सत्यापन, सतर्कता और रिपोर्टिंग की संस्कृति बनाएं।
 - इसे साझा करें! किसी को बचाएं!

माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड जम्मू ने यात्रा नियमों में किया बदलाव, जाने

पिंकी कुंडू

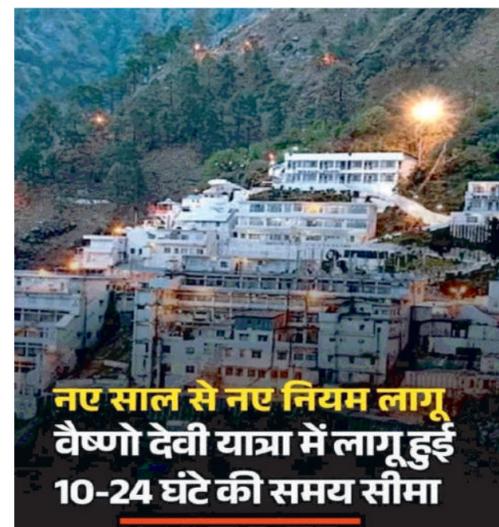
नए साल के अवसर पर जम्मू के रियासी जिले में स्थित वैष्णो देवी मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए श्री माता वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड ने यात्रा नियमों में बदलाव किया।

चढ़ाई और उतराई दोनों के लिए नए सख्त दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं, जिनका उद्देश्य भवन क्षेत्र में भीड़भाड़ रोकना, दुर्घटनाओं का जोखिम कम करना, मंदिर ट्रैक पर बेहतर भीड़ प्रबंधन और आपातकालीन प्रतिक्रिया सुनिश्चित करना है।

संशोधित नियमों के तहत, श्रद्धालुओं को रेडियो फ्रीक्वेंसी आईडेंटिफिकेशन कार्ड (RFID) प्राप्त करने के 10 घंटे के अंदर यात्रा शुरू करनी होगी।

दर्शन पूरा करने के बाद कटरा बेस कैम्प लौटने के लिए अधिकतम 24 घंटे का समय दिया गया है।

यह नियम तत्काल प्रभाव से लागू हो गए हैं। पहले RFID कार्ड लेने के बाद यात्रा शुरू करने की कोई सख्त समय सीमा नहीं थी। श्रद्धालु किसी वक्त भी चढ़ाई शुरू कर सकते थे और दर्शन के बाद भवन क्षेत्र में कई दिन तक रुक सकते थे, जिससे अक्सर भीड़भाड़



नए साल से नए नियम लागू वैष्णो देवी यात्रा में लागू हुई 10-24 घंटे की समय सीमा

और जाम की स्थिति बन जाती थी। कटरा से माता वैष्णो देवी भवन तक की दूरी लगभग 13 किलोमीटर है। यात्रा पैदल, घोड़े, पिट्टू, बैटरी कार या हेलीकॉप्टर से की जा सकती है। एक स्वस्थ व्यक्ति को पैदल चढ़ाई में 6 से 8 घंटे और उतरने में भी लगभग इतना ही समय लगता है। सामान्य दिनों में यात्रा 24 से 36 घंटे में पूरी हो जाती है, लेकिन नए साल के अवसर पर भीड़ की वजह से इसमें ज्यादा वक्त लग सकता है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

सूरन कंदा के चमत्कारी फायदे: जड़ से होने वाली बीमारियों, अपच, ब्लीडिंग के घरेलू आयुर्वेदिक नुस्खे

पिकी कुंझ

हमारी आयुर्वेदिक परंपरा में सूरन कंदा का बहुत खास महत्व है। "सूरन खाओ, तो पेट खराब नहीं होगा!" क्योंकि सूरन सिर्फ एक सब्जी नहीं बल्कि औषधीय गुणों से भरपूर एक नैचुरल प्रोडक्ट है।

आजकल के अनियमित खान-पान से होने वाली समस्याओं को हल करने में सूरन बहुत असरदार है।

- * जड़ की बीमारियाँ
- * अपच
- * शौच करते समय खून आना

सूरन क्या है? पोषण गुण

* सूरन (हाथी के पैर जैसा मीठा आलू) एक कंद वाली सब्जी है जो मिट्टी में उगती है। इसमें मुख्य रूप से ये चीजें होती हैं -

- * विटामिन C
- * विटामिन B6
- * फाइबर

* पोटेसियम

* कैल्शियम

* आयरन

सूरन

- * पाचन को बेहतर बनाता है
- * सूजन कम करता है
- * आंतों से टॉक्सिन निकालता है
- * गैस, कब्ज, एसिडिटी से राहत देता है
- * बवासीर और ब्लीडिंग के लिए सूरन का इस्तेमाल एनस के पास एक दर्दनाक गाँठ, जो एक सूजी हुई नस होती है, बवासीर का एक कारण है। सूरन इसके लिए बहुत सही है।

घरेलू नुस्खे

* सूरन को छोटे चौकोर टुकड़ों में काट लें

* पैन में थोड़ा सा शुद्ध घी डालें

* टुकड़ों को हल्का सुनहरा भूरा होने तक तलें।

* सुबह और शाम सेवन करें

फायदे-

सूजन कम करता है

खून बहना रोकने में मदद करता है

मल त्याग को आसान बनाता है

शरीर हल्का महसूस होता है

पाचन सुधारने के लिए सूरन

* अपच

* गैस

* पेट फूलना

* लंगड़ापन

हेल्दी फाइबर और एंजाइम

* आंतों की सेहत सुधारता है

* टॉक्सिन निकालता है

* भूख बढ़ाता है — इसे हफ्ते में 2-3 बार लें

आयुर्वेदिक तरीका आयुर्वेद के अनुसार, सूरन-

* वात-पित्त-कफ को बैलेंस करता है

* खून को साफ करता है

* मूल बीमारियों को कम करता है

* लिवर और पाचन को बेहतर बनाता

नेचुरल हेल्थ की ओर एक कदम

केमिकल दवाओं के बजाय रोजाना नेचर ने

एक बॉल्ड सॉल्यूशन निकाला है।

सूरन जैसी सिंपल सब्जी

* लंबे समय तक सेहत

* शरिया के हिसाब से नैचुरल इलाज

छोटा सा हल अगर मूल रोग, बदहजमी या शौच के कारण खून आ रहा हो, तो

* सोने के टुकड़े

* धी में हल्का फ्राई करें

* सुबह और शाम को खाएं

* कुछ ही दिनों में आपको फ्रक महसूस होगा।

हेल्थ ही असली दौलत है, शुगर-फ्री इंडिया की ओर एक कदम आगे।



केला + दूध + शहद का मिश्रण पुरुषों की स्टैमिना, ताकत और ऊर्जा बढ़ाने में काफ़ी असरदार माना जाता है।

पिकी कुंझ

मिश्रण कैसे, कब और क्यों लेना है — सब आसान भाषा में समझे, केला + दूध + शहद से स्टैमिना कैसे बढ़ती है?

1. ऊर्जा बढ़ाता है

* केला → प्राकृतिक कार्बोहाइड्रेट (तुरंत एनर्जी)

* दूध → प्रोटीन व कैल्शियम (मसल स्ट्रेंथ)

* शहद → नेचुरल शुगर (थकान कम)

इससे शरीर जल्दी थकता नहीं और सहनशक्ति बढ़ती है।

2. मसल रिकवरी बेहतर करता है

* दूध का प्रोटीन और केले का पोटेसियम एक्सरसाइज या मेहनत के बाद मसल को जल्दी ठीक करता है।

3. हार्मोन बैलेंस में मदद

नियमित सेवन से टेस्टोस्टेरोन को सपोर्ट मिलता है, जिससे पुरुष शक्ति में सुधार होता है, सही तरीका (बहुत जरूरी)

सामग्री

* 1 पका केला

* 1 गिलास गुनगुना या सामान्य दूध

* 1 चम्मच शुद्ध शहद

बनाने की विधि दोनों को अच्छे से मिक्स करें (ब्लेंडर या हाथ से)

कब लें? सुबह खाली पेट — सबसे अच्छा या रात को सोने से 1 घंटा पहले

कितने दिन में असर?

* 7-10 दिन → ऊर्जा में फर्क

* 3-4 हफ्ते → स्टैमिना और ताकत में सुधार

ध्यान रखने वाली बातें

* बहुत ज्यादा शहद न डालें

* बहुत ठंडा दूध न लें

* डायबिटीज हो तो डॉक्टर से पूछें

असर और बढ़ाने के लिए

* हफ्ते में 3-4 दिन हल्की एक्सरसाइज

* पर्याप्त नींद

* तनाव कम रखें



टूटे रिश्तों की यादें? दिमाग शांत नहीं रहता? सोना मुश्किल? शरीर पलंग पर - मन पुरानी यादों में अटका।

पिकी कुंझ

Scientific Reason:

* अश्वगंधा में withanolides होते हैं — ये stress hormones (cortisol) को balance करने में help करते हैं।

* Milk में मौजूद tryptophan sleep hormones को support करता है।

* दोनों मिलकर emotional tension soften करते हैं — mind slow होता है, नींद steady आती है।

Ayurvedic Reason:

* अश्वगंधा मन:शामक rasayana — anxiety, emotional pain, fear, overthinking में support।

* गुनगुना दूध वात और पित्त शांत करता है — वही दो दोष emotional breakdown की जड़।

Fayde (Benefits):

* emotional tension कम — पुरानी यादों का बोझ हल्का।

* दिमाग शांत — रात में नींद गहरी।

* nervous system relax — stress कम।

* सुबह हल्का feel, मन स्थिर।

Nuksan (Harms):

* thyroid, BP, sugar patient doctor से पूछें।

* नींद की दवा का replacement न समझें — support मानें।

* दिमाग बहुत sluggish लगे तो मात्रा घटाएँ।

करता है — वही दो दोष emotional breakdown की जड़।

Fayde (Benefits):

* emotional tension कम — पुरानी यादों का बोझ हल्का।

* दिमाग शांत — रात में नींद गहरी।

* nervous system relax — stress कम।

* सुबह हल्का feel, मन स्थिर।

Nuksan (Harms):

* thyroid, BP, sugar patient doctor से पूछें।

* नींद की दवा का replacement न समझें — support मानें।

* दिमाग बहुत sluggish लगे तो मात्रा घटाएँ।



पेट में कीड़े की समस्या बार-बार हो जाती है?

पिकी कुंझ

पेट ठीक से साफ नहीं होता, भूख भी अजीब सी रहती है और शरीर धीरे-धीरे कमजोर होने लगता है। इसका कारण पेट में कीड़े होना भी हो सकता है, आइए जाने इसका घरेलू एवं सरल इलाज

Scientific Reason: पेट में कीड़े (intestinal worms) अक्सर गंदे पानी, कच्चे भोजन या कमजोर digestion की वजह से पनपते हैं। कच्चे पपीते में मौजूद papain enzyme कीड़ों के लिए अनुकूल माहौल को खत्म करता है और उनकी पकड़ को आंतों से ढीला करता है। जब digestion सुधरता है, तो कीड़े अपने-आप टिक नहीं पाते।

Ayurvedic Reason:

आयुर्वेद में कच्चा पपीता कृमिनाशक माना गया है। यह पाचन अग्नि को तेज करता है और आम (toxins) को बाहर निकालने में मदद करता है। जब अग्नि सही हो जाती है, तो कीड़े अपने-आप खत्म होने लगते हैं।

Fayde (Benefits):

* पेट हल्का और साफ महसूस होता है

* बार-बार पेट दर्द में राहत

* भूख सामान्य होने लगती है

* शरीर की कमजोरी धीरे-धीरे कम

* digestion पहले से बेहतर

Nuksan (Harms):

* ज्यादा मात्रा से loose motion

* गर्भवती महिलाएँ न लें

* बच्चों को बहुत कम मात्रा

* 7-10 दिन से ज्यादा

पेट ठीक से साफ नहीं होता, भूख भी अजीब सी रहती है और शरीर धीरे-धीरे कमजोर होने लगता है। इसका कारण पेट में कीड़े होना भी हो सकता है, आइए जाने इसका घरेलू एवं सरल इलाज

Scientific Reason: पेट में कीड़े (intestinal worms) अक्सर गंदे पानी, कच्चे भोजन या कमजोर digestion की वजह से पनपते हैं। कच्चे पपीते में मौजूद papain enzyme कीड़ों के लिए अनुकूल माहौल को खत्म करता है और उनकी पकड़ को आंतों से ढीला करता है। जब digestion सुधरता है, तो कीड़े अपने-आप टिक नहीं पाते।

Ayurvedic Reason:

आयुर्वेद में कच्चा पपीता कृमिनाशक माना गया है। यह पाचन अग्नि को तेज करता है और आम (toxins) को बाहर निकालने में मदद करता है। जब अग्नि सही हो जाती है, तो कीड़े अपने-आप खत्म होने लगते हैं।

Fayde (Benefits):

* पेट हल्का और साफ महसूस होता है

* बार-बार पेट दर्द में राहत

* भूख सामान्य होने लगती है

* शरीर की कमजोरी धीरे-धीरे कम

* digestion पहले से बेहतर

Nuksan (Harms):

* ज्यादा मात्रा से loose motion

* गर्भवती महिलाएँ न लें

* बच्चों को बहुत कम मात्रा

* 7-10 दिन से ज्यादा



पेट में कीड़े की समस्या? सुबह खाली पेट 1 चम्मच कच्चा पपीते का रस। आंतों से कीड़े साफ हो जाएंगे।

सुबह पेट साफ़ नहीं होता? कब्ज़ रहती है?

पिकी कुंझ

सोचते हो — कल से ठीक हो जाएगा... पर पेट रोक देता है दिन की शुरुआत।

Scientific Reason: छुहारे में मौजूद soluble fiber + natural sugars + minerals colon की दीवारों पर पानी खींचकर stool को soft बनाते हैं।

* रात को भिगोने से छुहारा नरम हो जाता है, जिससे सुबह खाते ही आंतें active हो जाती हैं,

* bowel movement smooth और पूरी तरह से होता है।

* Fiber stool को bulky बनाता है, pressure create होता है और

* शरीर आसानी से waste बाहर निकाल देता है — यही कारण है कि पेट हल्का और साफ महसूस होता है।

Ayurvedic Reason: आयुर्वेद में छुहारा वात शांत करने वाला माना गया है — और

* कब्ज की जड़ ही वात imbalance है।

* भिगोकर खाने से छुहारा ठंडा और सौम्य हो जाता है — जिससे पेट की dryness कम होती है और natural lubrication बढ़ती है।

Fayde (Benefits):

* सुबह स्टूल आसानी से निकलता है — पेट दबाव नहीं बनाता।

* गैस, भारीपन और पेट की जकड़न में आराम



सुबह पेट साफ़ नहीं होता? 2 छुहारे रात को भिगो दो - सुबह खा लो कब्ज दूर - पेट एकदम साफ़ और हल्का !

मिलता है।

* दिमाग हल्का महसूस होता है और दिन energetic शुरू होता है।

* bloating कम होती है, पेट नरम और शांत लगता है।

Nuksan (Harms):

* बहुत ज्यादा छुहारे loose motion की स्थिति बना सकते हैं।

* zimmerdari से खाओ — diabetes वाले sugar spike महसूस कर सकते हैं।

पेट दर्द बार-बार? पेचिस? गैस?

पिकी कुंझ

ग्रामीण इंडिया का खास उपाय — चरोटा

शहर की दवा ने धोखा दिया? एक बार देहात का उपाय ट्राय करो।

Scientific Reason: चरोटा में natural antispasmodic + anti-inflammatory गुण होते हैं।

* यह gut muscles को relax करके cramping और twisting pain को calm करते हैं।

* फाइबर rich होने से पेचिस और loose motion में भी comfort मिलता है।

* स्वाद थोड़ा पनसुते

जैसा — पर असर heavy!

Ayurvedic Reason: आयुर्वेद में चरोटा अग्नि दीपक और कफ नाशक — यानि digestion strong + gas कम + पेट दर्द शांत।

Fayde:

* पेट दर्द हल्का

* digestion support

* गैस कम

* पेचिस में आराम

* पेट हल्का और शांत

Nuksan:

* ज्यादा न खाएँ

* dehydration में पानी बढ़ाएँ

* chronic pain में डॉक्टर

* babies में small मात्रा



पेट दर्द की समस्या में ग्रामीण चरोटा को खाना पसंद करते हैं। स्वाद पनसुते जैसा लेकिन शरीर के लिए काफी फायदेमंद पेचिस हो या फिर पेट का मरोड़ सभी के लिए ये भाजी बेस्ट है।

Read Caption

सुबह उठते ही सिर भारी? बाँडी चलती है लेकिन दिमाग अटका हुआ लगता है? नींद खुलती है — पर दिमाग जागता नहीं।

पिकी कुंझ

Scientific Reason:

* दालचीनी blood vessels को खोलने में support करती है — जिससे सुबह-सुबह धीमा blood flow active होता है।

* शहद brain को gentle glucose energy देता है — जिससे mental fog और heaviness कम होती है।

* दोनों मिलकर circulation + oxygen supply improve करते हैं, और सिर के दबाव जैसा अहसास हल्का महसूस होता है।

Ayurvedic Reason:

* आयुर्वेद में सुबह सिर भारी होना वात + कफ imbalance का संकेत।

* दालचीनी कफ कम करती है

-heaviness कम।

* शहद अग्नि बढ़ाता है — sluggishness हटती है।

Fayde (Benefits):

* दिमाग clarity मिलती है — subah की सुस्ती टूटती है।

* सिर का दबाव, heaviness और चकराहट कम महसूस।

* mood और alertness बेहतर।

* body active और fresh महसूस।

Nuksan (Harms):

* diabetes में शहद limit — sugar spike हो सकता है।

* दालचीनी ज्यादा लेने से acidity और जलन।

* सुबह empty stomach बहुत गर्म प्रकृति हो सकती है — पानी जरूरी।



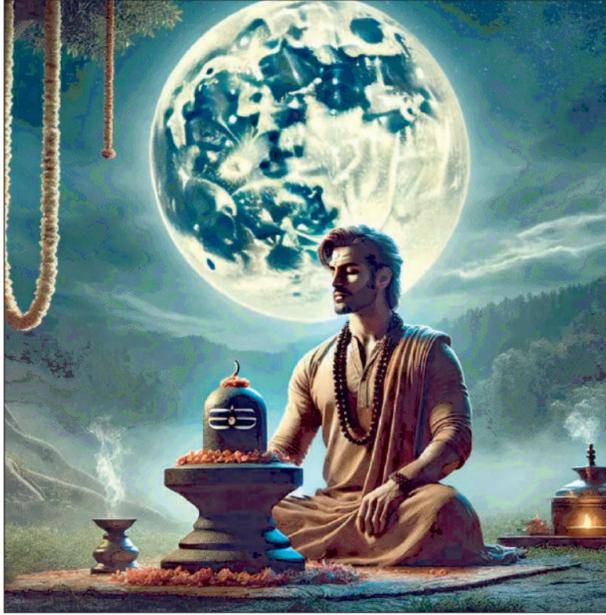
सुबह उठते ही सिर भारी रहता है? 1 चुटकी दालचीनी पाउडर + 1 चम्मच शहद। ब्लड सर्कुलेशन सुधरता है दिमाग हल्का लगता है।



पिकी कुंडू

महामृत्युंजय मंत्र की वैज्ञानिक शक्ति को जाने और जीवन सफल बनाए

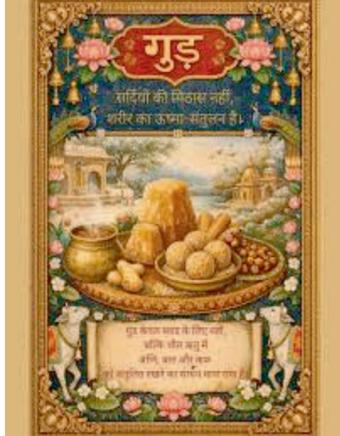
का संचार होता है।
* जिसका असर मंत्र पढ़ने वाले के साथ मंत्र सुनने वाले के शरीर पर भी होता है।
* इन चक्रों के कंपन से शरीर में शक्ति आती है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।
इस तरह स्वर और सांस के तालमेल के साथ जाप करने पर बीमारियों से जल्दी मुक्ति मिलती है।
महामृत्युंजय मंत्र के हर अक्षर का विशेष महत्व और विशेष अर्थ है। प्रत्येक अक्षर के उच्चारण में अलग-अलग प्रकार की ध्वनियां निकलती हैं तथा शरीर के विशेष अंगों और नाड़ियों में खास तरह की कंपन पैदा करती हैं। इस कंपन के द्वारा शरीर से उच्च स्तरीय विद्युत प्रवाह पैदा होता है। इस विद्युत प्रवाह से निकलने वाली तरंगें वातावरण एवं आकाशीय तरंगों से जुड़कर कर मानसिक और शारीरिक उर्जा का शरीर में प्रवाह करती हैं।
समुद्र मंथन पर देवताओं और असुरों को लड़ाई के समय शुक्राचार्य ने अपनी यज्ञशाला में इसी महामृत्युंजय मंत्र के अनुष्ठान का उपयोग देवताओं द्वारा मारे गए राक्षसों को जीवित करने के लिए किया था। इसलिए इसे मृत संजीवनी के नाम से भी जाना जाता है।



सर्दियों में गुड़ को हम अक्सर केवल एक मिठास के रूप में देखते हैं, जबकि आयुर्वेद में गुड़ का स्थान कहीं अधिक गहरा है।

पिकी कुंडू

शीत ऋतु वह काल है जब शरीर की अग्नि स्वाभाविक रूप से प्रबल होती है, पर साथ ही वात की रूक्षता और कफ का संचय भी बढ़ता है। ऐसे समय में शरीर को केवल स्वाद नहीं, बल्कि ऊष्मा, स्थिरता और स्थिर पोषण की आवश्यकता होती है।
* गुड़ अपने उष्ण और पोषक स्वभाव के कारण शीत ऋतु में शरीर को भीतर से सहारा देता है।
* यह पाचन अग्नि को समर्थ बनाता है,
* भोजन के बाद भारीपन को कम करता है और
* ठंड से होने वाली जकड़न में संतुलन लाने में सहायक होता है।
परंतु आयुर्वेद स्पष्ट कहता है— कोई भी द्रव्य अपने आप में औषधि नहीं होता।
उसे औषधि बनाता है उसका सही समय, सही मात्रा और सही संयोजन।
* अत्यधिक मात्रा में लिया गया गुड़ लाभ के स्थान पर कफ का कारण बन सकता है, और
* गलत समय या गलत संयोजन में वही गुड़ आम का कारण भी बन सकता है।
इसीलिए परंपरा में गुड़ को तिल, अदरक, चना जैसे द्रव्यों के साथ सीमित और विवेकपूर्ण रूप में लिया गया। यही कारण है कि
* तिल-गुड़,
* अदरक-गुड़ काढ़ा और
* भुना चना-गुड़ शीत ऋतु के पारंपरिक सहचर रहे हैं। स्वास्थ्य कोई त्वरित परिणाम नहीं, बल्कि धीरे-धीरे विकसित होने वाला संतुलन है। और आयुर्वेद उसी संतुलन की शिक्षा देता है।



* अदरक-गुड़ काढ़ा और
* भुना चना-गुड़ शीत ऋतु के पारंपरिक सहचर रहे हैं। स्वास्थ्य कोई त्वरित परिणाम नहीं, बल्कि धीरे-धीरे विकसित होने वाला संतुलन है। और आयुर्वेद उसी संतुलन की शिक्षा देता है।

मांग में सिंदूर और सिंदूर की बिंदिया लगाने का मेडिकल साइंस, वैदिक, ज्योतिष आधार पर कारण और फायदे

पिकी कुंडू

हमारे वेद पुराणों में सुहागन स्त्रियों के लिए मांग में सिंदूर और माथे पर सिंदूर की बिंदिया लगाने की बात लिखी है और हजारों सालों से स्त्रियां इस चीज का इस्तेमाल कर रही हैं।
आईएमए जैसी संस्थाओं द्वारा हमारे इन रीति रिवाजों का मजाक बना बना कर आज यह हालत पैदा कर दी है कि स्त्रियां इसको गुलामी की निशानी मानने लग चुकी हैं, जबकि इन संस्थाओं ने कभी बुद्धि का विरोध नहीं किया। असल में देखा और समझा जाए तो बुद्धि गुलामी की निशानी है।
क्यों आओ जानते हैं कि इसके पीछे का असली कारण दवा उद्योग की मुनाफाखोर व्यवस्था है।
इन सब बातों का अर्थ / कारण आयुर्वेद और यजुर्वेद से समझते हैं।
हजारों सालों से पारे के कुछ यौगिक हमारे आयुर्वेद में फर्टिलिटी और जवाना बनाए रखने के लिए इस्तेमाल किए जाते रहे हैं। इनमें एक है मर्करी सल्फाइड जिसको हम आम भाषा में सिंदूर कहते हैं।
आईएमए जैसी संस्थाओं ने पारे के इस्तेमाल के खिलाफ यह मुहिम चलाई।
यह सिंदूर किसी स्त्री को यौवन बनाए रखने के लिए उसकी यौन शक्ति बढ़ाने के लिए एक जरूरी वस्तु है, लेकिन इसका इस्तेमाल सिर्फ शादीशुदा स्त्रियों के लिए ही कहा गया है क्योंकि हमारे शास्त्रों में यौन क्रिया का मतलब मौज मस्ती के लिए नहीं

सिर्फ संतान प्राप्ति के लिए कहा गया है। इसलिए यह व्यवस्था सिर्फ शादीशुदा स्त्रियों के लिए निर्धारित की गई है।
जब कोई स्त्री मांग में सिंदूर और माथे पर सिंदूर की बिंदिया लगाती है तो उसकी पिट्यूटरी ग्लैंड को मर्करी सल्फाइड से एक स्थिर विचार और शक्ति मिलती है उसका हार्मोनल साइकिल ठीक चलता है ओवर और यूटर्स की कोई समस्या नहीं आती और थायराइड ग्लैंड ठीक काम करता है। इसलिए उसमें मूड स्विंग कम होता है, इससे परिवार में सुख शांति बनी रहती है जिससे पुरुष ज्यादा परेशान नहीं होता। जब पुरुष को मानसिक रूप से कम दुख होता है तो जाहिर है उसे कम बीमारियां होंगी और वह अपना काम काज सुचारु रूप से कर सकता है। इसलिए जाहिर है उसकी आयु और स्वास्थ्य ठीक होगा।
शादीशुदा स्त्रियों को यह समझना जरूरी है कि वह सदैव सिंदूर से ही मांग भरे और सिंदूर की ही बिंदिया लगाए ना की लाल रंग की चीज से मांग भरे और साथ ही बाजारी प्लास्टिक या अन्य बिंदिया ना लगाए, क्योंकि सिंदूर एक आयुर्वेदिक इस्तेमाल का चिह्न है।
माथे पर बिंदी स्त्री की पिट्यूटरी ग्लैंड को फोकस देती है और मांग का सिंदूर कुछ ऐसी नर्वस सिस्टम की तंत्रिकाओं को पारे का पोषण देती है जिससे उसके बालों में जान रहती है।
पारे को यौगिक आयुर्वेद में अजर मतलब शरीर

को सदा जवान बनाए रखने वाला माना जाता है।
कम्यूनिस्ट या वैदिक संस्कृति विरोधी इसका मजाक उड़ाने के लिए कह सकते हैं की
* पुरुष क्यों नहीं सिंदूर लगा सकते या
* विदेशों और बाकी धर्मों के लोगों में अगर स्त्रियां सिंदूर नहीं लगाती तो क्या उनकी यौन शक्ति या यौवन समाप्त हो जाता है।
इसका जवाब है
* मुस्लिमों में बहू बेटियों को लूट का माल माना जाता है उनको अपने जीवन में कई स्त्रियां मिल जाती हैं इसके साथ नहीं तो उसके साथ। उनको स्त्रियों के स्वास्थ्य से कोई मतलब नहीं होता उनके लिए स्त्रियां वस्तु के समान होती हैं।
* ईसाई धर्म में पूरी बाइबल यौन क्रिया के खिलाफ भरी पड़ी है। आप यूरोपियन देशों में पुरानी मूर्तियों को देखें उनमें पुरुषों के लिंग बहुत छोटे दिखाए गए हैं क्योंकि ईसाई धर्म का सारा फोकस यौन क्रिया पर पाबन्दी करना है। स्त्रियों का नन बनना ही सबसे उत्तम कहा गया है।
* जबकि भारतीय संस्कृति में संतान उत्पन्न करना एक जीवन का जरूरी संस्कार कहा गया है। अगर व्यक्ति अपने जीवन में संतान उत्पन्न नहीं कर पाता तो उस को हम कहते हैं कि वह पितृ ऋण और पृथ्वी ऋण से मुक्त नहीं हो सकता।
* यूरोप के ठंडे देशों में सब को अपने सिर ढक लपेट कर रखते पढ़ते हैं।
अब प्रश्न यह है की पुरुष क्यों नहीं सिंदूर से

मांग भरते तो इसका जवाब है कि स्त्रियों का हार्मोनल साइकिल और सिस्टम पुरुषों से अलग होता है।
आधुनिक पढ़े लिखे लोगों का यह तर्क वैसा ही हो जाएगा कि अगर स्त्रियों कि दाढ़ी मूँछ नहीं होती तो पुरुषों की क्यों।
आजकल की आधुनिक स्त्रियां जो इन रीति रिवाजों का मजाक बनाती हैं वे देख ले की
* पुराने जमाने में 60 साल की स्त्री भी उनसे स्लिम ट्रिम और चुस्त दुरुस्त होती थी।
* महिलाएं 50-55 की आयु में भी बच्चे उत्पन्न कर लेती थी।
* आज कल की स्त्रियों के हार्मोनल साइकिल और यूटर्स की समस्याएं भरी जवानों में ही शुरू हो जाती हैं।
इन्का यही कारण है जिससे आईएमए की दवा माफिया आपका शोषण कर रही है।
अपनी संस्कृति, रीति रिवाजों का मतलब समझें आयुर्वेद और सनातन संस्कृति के अनुसार खाने पीने का तरीका अपनाएं। नहीं तो इंडियन मेडिकल एसोसिएशन में बैठे जियेलाल जैसे भाईजान पहले आपको दुनिया भर कि उल्टी सीधी दवाइयां खिलाएं फिर दुनिया भर के टेस्ट करवाएं फिर आपकी जेब खाली करके आपको ईसाई बनवाएंगे। जबकि जियेलाल जैसे आईएमए के ईसाई 50 वर्ष की आयु में खुद चार सीढ़ियां चढ़ उतर नहीं सकते जबकि हमारे योगी आयुर्वेद का



इस्तेमाल करने वाले लोग 60-70 की आयु में भी बंदरों की तरह उछल कूद कर देते हैं।
यहां हम यह नहीं कहना चाहते की एलोपैथी गलत है इमरजेंसी में और दुर्घटना के मामलों में यह आयुर्वेद से काफी विकसित है लेकिन दवा उद्योग की मुनाफाखोर व्यवस्था आपको सदा के लिए

मरीज बना रही है।
अपनी संस्कृति और आयुर्वेद आपको मरते दम तक स्वस्थ रख सकती है पर इस इसी दवा माफिया ने वायसर बनाया / फैलाया और अपनी अपनी वैकसीन बना कर दूसरे की वैकसीन को घटिया बताते रहते हैं।

जब ग्रह नाराज हो जाएं तो उन्हें कैसे मनाए ?

पिकी कुंडू



मनुष्य का पूरा जीवन 9 ग्रहों और 27 नक्षत्रों की चाल और दृष्टि पर टिका हुआ है। सामान्य भाषा में कहे तो जब ग्रहों की कृपा हो तो लोग बलवान और ग्रह नाराज हो जाएं तो भिखारी बन जाते हैं। हम यहां बता रहे हैं कि जब ग्रह नाराज हो जाएं तो उन्हें कैसे मनाएं।
1. शनि:- शनि के लिए दशरथ कृत शनि स्तोत्र में लिखा है जो व्यक्ति पीपल वृक्ष के नीचे बैठ कर शनि देवता के दस नामों को पढ़ेगा उसे शनि की पीड़ा कभी नहीं होगी। शनिवार के दिन सरसों के तेल को अपने ऊपर से उतार कर शनि मंदिर में रखके आ जाना चाहिये। चढ़ाना नहीं है सिर्फ रखके आ जाना है, शनिवार को काले वस्त्र आदि का दान करना चाहिये, शनि को मजबूत करने के लिए नीलम पहन लेना चाहिये (कुंडली विश्लेषण करवाने के उपरांत), हनुमान चालीसा का नित्य दो बार पाठ करना भी अति लाभप्रद होता है, ऐसा कहा गया है की शनि देवता हनुमान जी के भक्तों को कभी परेशान नहीं करते हैं।
2. राहु:- राहु के लिए सबसे अच्छा उपाय मां दुर्गा की साधना है उस से उत्तम कुछ भी नहीं है, दुर्गा सप्तशती को विधि विधानपूर्वक घर में नित्य पाठ करना सदा कष्टों से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त कर देता है। चौटी को बाबन्दी में शककर डालना भी राहु की शांति का उपाय है और मछलियों को आटे की गोलियां डालना भी। किसी अपाहिज को कढ़ी बदसूरत व्यक्ति को यथेष्ट जेब में से जो निकल आये वो दे देना चाहिये और उसके बारे में सोचना भी नहीं चाहिये। किसी भी दान को कर के उसके बारे में वैसे भी नहीं सोचना चाहिये।
3. मंगल:- मंगल के लिए हनुमान उपासना से बढ़ कर कुछ भी नहीं है। मूंगा मंगल का रत्न है और उसे मजबूत करने के लिए मूंगा धारण करना चाहिये। हनुमान चालीसा में भी मूंगा का उल्लेख आता है। मंगल वार के दिन उपवास करना भी एक उपाय है और शराबमांस से परहेज करना भी। मंगल स्तोत्र का पाठ भी लाभदायक होता है।
4. केतु:- केतु को बहुत ही शुभ और मोक्षकारक छाया गृह माना गया है साथ ही बहुत ही अशुभ भी। इसका रत्न लहसुनिया होता है जो कई प्रकार के होते हैं और बहुत सस्ते पत्थर होते हैं। केतु कुंडली में गडबड है तो ये ऐसी बीमारी देता है जिसे सामान्यतः जल्दी पकड़ नहीं पाता। व्यक्ति पर झूठे आरोप लग जाते हैं। केतु की शांति के लिए कहा जाता है की कुत्ते को रोटी खिलानी चाहिये हमारे हिसाब से केतु और राहु की सामान्य रूप से मां दुर्गा की आराधना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है और केतु के लिए गणेश जी की पूजा के

अलावा शास्त्रोक्त दान आदि करना चाहिये।
5. शुक्रे:- शुक्रे ग्रह है, मनुष्य की कामुकता से इसका सीधा सम्बन्ध भी है, और हर प्रकार के सौंदर्य और ऐश्वर्य से ये सीधे सम्बन्ध रखता है। शुक्रे के लिए ओपल, हीरा, स्फटिक का प्रयोग करना चाहिये और यदि ये बहुत ही खराब है तो पुरुषों को अश्विनी मुद्रा या क्रिया रोज करनी चाहिये। शुक्रे को अच्छा करने के लिए दुर्गा नाम व चालीसा रोज करनी चाहिये।
6. सूर्य:- सूर्य राजा है, प्रबल है, तेजस्वी है, प्राण है, गमी है ये कुंडली में

अच्छा नहीं है तो मनुष्य बहुत भटकता है और मान सम्मान से दूर ही रहता है। इसका रत्न माणिक्य है। आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ पूर्ण श्रद्धा के साथ करना चाहिये। साथ ही सूर्य को ताम्बे के पात्र में गुड़ और पुष्प समर्पित करके अर्घ्य देना चाहिये।
8. बुध:- बुध गुरुकुल ग्रह है। बुद्धि की तीक्ष्णता, व्यापारिक बुद्धि, लेखा-जोखा, मीडिया, सेइसका सीधा सम्बन्ध होता है। इसका रत्न पन्ना है। ये चर्म रोग भी देने में बहुत सक्षम होता है। विष्णु सहस्रनाम एवं नारायण कवच का रोज पाठ नियम से करना चाहिये अवश्य ही लाभ होता है।
9. गुरु:- गुरु को सही करने के लिए गाय को एक मुट्ठी भीगी हुई पीली चना दाल हर गुरुवार को खिलानी चाहिये, व्रत करना चाहिये, पुष्प वस्त्रदान में देना चाहिये, हल्दी की गांठ कांख में बांधनी चाहिये, वृद्ध और सदाचारी ब्राह्मण को सपरिवार भोजन करवाना चाहिये।

ज्योतिषशास्त्र में जातक को मंगली को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आपके दांपत्य जीवन में कलह के योग कब उत्पन्न हो सकते हैं।
जन्मपत्री में दांपत्य-सुख का विचार सप्तम भाव और सप्तमेश से किया जाता है। इसके अतिरिक्त शुक भी दांपत्य-सुख का प्रबल कारक होता है क्योंकि शुक भोग-विलास और शैथ्या सुख का प्रतिनिधि है। पुरुष की जन्मपत्रिका में शुक पत्नी का और स्त्री की जन्मपत्रिका में गुरु पति का कारक माना गया है। जन्मपत्रिका में द्वादश भाव शैथ्या सुख का भाव होता है। अतः इन दांपत्य सुख प्रदाता कारकों पर यदि पाप ग्रहों, क्रूर ग्रहों और अलगाववादी ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति आजीवन दांपत्य सुख को तरसता रहता है।
सूर्य, शनि, राहु अलगाववादी स्वभाव वाले ग्रह हैं, वहीं मंगल और केतु मारणात्मक स्वभाव वाले ग्रह हैं। ये सभी दांपत्य-सुख के लिए हानिकारक होते हैं। कुंडली में सप्त या सातवां घर विवाह और दांपत्य जीवन से संबंध रखता है। यदि इस घर पर पाप ग्रह या नीच ग्रह की दृष्टि रहती है तो वैवाहिक

खराब ग्रहों के कारण नहीं मिलता दांपत्य सुख

पिकी कुंडू



जानत धर्म में विवाह एक अति महत्वपूर्ण संस्कार है। वही सुखद और प्रेमपूर्ण दांपत्य का आधार है लेकिन प्रारब्ध कर्मानुसार व्यक्ति की जन्मपत्रिका में कुछ ऐसी ग्रह स्थितियां निर्मित हो जाती हैं जिसके फलस्वरूप उसे दांपत्य सुख नहीं मिलता है। कलहपूर्ण दांपत्य अंत्यत कष्टप्रद और नारकीय जीवन के समान होता है। वैसे भी हर पुरुष सुंदर पत्नी और स्त्री धनवान पति की कामना करते हैं।
जीवन में किसी का साथ मनुष्य के लिए बेहद आवश्यक हो जाता है। कोई साथ हो या दांपत्य साथी अनुकूल हो तो हर तरह की परिस्थितियों का सामना किया जा सकता है लेकिन यदि दांपत्य जीवन में दोनों में किसी एक व्यक्ति का व्यवहार यदि अनुकूल नहीं रहता है तो रिश्ते में कलह और परेशानियों का दौर लगा रहता है।
ज्योतिषशास्त्र में जातक की जन्म कुंडली को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि आपके दांपत्य जीवन में कलह के योग कब उत्पन्न हो सकते हैं।
जन्मपत्री में दांपत्य-सुख का विचार सप्तम भाव और सप्तमेश से किया जाता है। इसके अतिरिक्त शुक भी दांपत्य-सुख का प्रबल कारक होता है क्योंकि शुक भोग-विलास और शैथ्या सुख का प्रतिनिधि है। पुरुष की जन्मपत्रिका में शुक पत्नी का और स्त्री की जन्मपत्रिका में गुरु पति का कारक माना गया है। जन्मपत्रिका में द्वादश भाव शैथ्या सुख का भाव होता है। अतः इन दांपत्य सुख प्रदाता कारकों पर यदि पाप ग्रहों, क्रूर ग्रहों और अलगाववादी ग्रहों का प्रभाव हो तो व्यक्ति आजीवन दांपत्य सुख को तरसता रहता है।
सूर्य, शनि, राहु अलगाववादी स्वभाव वाले ग्रह हैं, वहीं मंगल और केतु मारणात्मक स्वभाव वाले ग्रह हैं। ये सभी दांपत्य-सुख के लिए हानिकारक होते हैं। कुंडली में सप्त या सातवां घर विवाह और दांपत्य जीवन से संबंध रखता है। यदि इस घर पर पाप ग्रह या नीच ग्रह की दृष्टि रहती है तो वैवाहिक

जीवन में परेशानियों का सामना करना पड़ता है।
यदि जातक की जन्मकुंडली में सप्तम भाव में सूर्य हो तो उसकी पत्नी शिक्षित, सुशील, सुंदर और कार्या में दक्ष होती है, किंतु ऐसी स्थिति में सप्तम भाव पर यदि किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो दांपत्य जीवन में कलह और सुखों का अभाव बन जाता है।
यदि जन्म कुंडली में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, द्वादश स्थान स्थित मंगल होने से जातक को मंगली योग होता है इस योग के होने से जातक के विवाह में विलंब, विवाहोपरांत पति-पत्नी में कलह, पति या पत्नी के स्वास्थ्य में शिथिलता, तलाक और क्रूर मंगली होने पर जीवन साथी की मृत्यु तक हो सकती है।
जब जन्म-कुंडली के सातवें या सप्तम भाव में अगर अशुभ ग्रह या क्रूर ग्रह (शनि, केतु या मंगल) ग्रहों की दृष्टि हो तो दांपत्य जीवन में कलह के योग उत्पन्ना हो जाते हैं। शनि और राहु का सप्तम भाव होना भी वैवाहिक जीवन के लिए शुभ नहीं माना जाता है।
राहु, सूर्य और शनि पृथक्तावादी ग्रह हैं, जो सप्तम (दांपत्य) और द्वितीय (कुटुंब) भावों पर विपरीत प्रभाव डालकर वैवाहिक जीवन को नारकीय बना देते हैं। यदि अकेला राहु सातवें भाव में और अकेला शनि पांचवें भाव में बैठा हो तो तलाक हो जाता है। किंतु ऐसी अवस्था में शनि को लग्नेश नहीं होना चाहिये। या लग्न में उच्च का गुरु नहीं होना चाहिये।
यदि लग्न में शनि स्थित हो और सप्तमेश अस्त,

निर्बल या अशुभ स्थानों में हो तो जातक का विवाह विलंब से होता है और जीवनसाथी से उसका मतभेद रहता है। यदि सप्तम भाव में राहु स्थित हो और कार्या में दक्ष होती है, किंतु ऐसी स्थिति में सप्तम भाव पर यदि किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो दांपत्य जीवन में कलह और सुखों का अभाव बन जाता है।
यदि लग्न में मंगल हो या सप्तमेश अशुभ भावों में स्थित हो और द्वितीयेश पर मारणात्मक ग्रहों का प्रभाव हो तो पत्नी की मृत्यु के कारण व्यक्ति को दांपत्य सुख से वंचित होना पड़ता है। यदि किसी स्त्री की जन्मपत्रिका में गुरु पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव हो, सप्तमेश पाप ग्रहों से युत हो और सप्तम भाव पर सूर्य, शनि और राहु की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री को दांपत्य सुख प्राप्त नहीं होता है।
ध्यान दें - यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में वैवाहिक जीवन को लेकर परेशानियां हैं तो उपाय के लिए सबसे पहले पति-पत्नी की कुंडली का मिलान करवाएं। दोनों जातकों की कुंडली का मिलान करके ही कोई अनुभवी ज्योतिषाचार्य आपको उपाय बता सकता है।
कई बार देखा गया है कि यदि पत्नी की कुंडली में यह दोष मौजूद है और पति की कुंडली अनुकूल है तो समस्या थोड़ी कम हो जाती है और इसी के उलट ही कई बार हो जाता है। लेकिन यदि दोनों व्यक्तियों की कुंडली में सप्तम भाव सप्तम भाव नहीं रहता है तो उस स्थिति में जीवन नारकीय बन जाता है। किसी भी परिस्थिति में कुंडली का मिलान समय से कराकर उपायों को अगर अपनाया जाए तो पीड़ा कम हो।

संवाद, सहमति और राष्ट्रहित: अटल युग का शासन मॉडल

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

भारतीय राजनीति के इतिहास में अटल बिहारी वाजपेयी का उदय एक ऐसे प्रकाशपुंज के रूप में हुआ, जिसकी उजाला आज भी राष्ट्र के पथ को आलोकित कर रही है। 25 दिसंबर को उनकी 101वीं जयंती पर मनाया जाने वाला सुशासन दिवस केवल स्मरण का अवसर नहीं, बल्कि उन अमर सुशासन मूल्यों का जीवंत उत्सव है, जिन्होंने भारत को सुदृढ़ता, समृद्धि और वैश्विक सम्मान प्रदान किया। अटल जी ने शासन को सत्ता की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि जनता की सेवा, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व का प्रभावी माध्यम बनाया। उनकी दूरदर्शी सोच ने राष्ट्र को सुरक्षा की मजबूत ढाल दी, विकास को नई गति दी और समावेशी प्रगति की सशक्त मिसाल स्थापित की। वर्ष 2025 में सुशासन दिवस "प्रशासन गाँव की ओर" थीम के साथ मनाया जा रहा है, जो ग्रामीण भारत को सशक्त बनाने और शासन को गाँव-गाँव तक पहुँचाने के संकल्प को प्रतिबिंबित करता है। अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को ग्वालियर में एक साधारण परिवार में हुआ था। बचपन से ही राष्ट्रप्रेम और काव्य से जुड़े अटल जी स्वतंत्रता संग्राम के सक्रिय योद्धा बने। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ाव ने उन्हें राजनीति की मजबूत नींव दी। भारतीय जनसंघ की स्थापना में उनकी प्रमुख भूमिका रही और बाद में

भारतीय जनता पार्टी के वे मार्गदर्शक बने। तीन बार प्रधानमंत्री रहते हुए उन्होंने गठबंधन सरकारों को स्थिरता और दिशा दी। अजातशत्रु कहे जाने वाले अटल जी ने विपक्ष को भी सम्मान दिया, जिससे राजनीति में संवाद की नई संस्कृति स्थापित हुई। उनकी वाक्पटुता संसद की गुंजाती थी और काव्यात्मक अभिव्यक्ति ने उन्हें जनता का चहेता बनाया। विदेश नीति में लाहौर बस यात्रा से शांति की कोशिश की, जबकि दृढ़ता से राष्ट्रीय हितों की रक्षा की।

अटल जी के नेतृत्व में 1998 के पोखरण-द्वितीय परमाणु परीक्षण ने भारत को परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र बनाया। इस कदम ने न केवल सुरक्षा को मजबूत किया, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाई। कारगिल युद्ध में उनकी दृढ़ता और सैनिकों का मनोबल बनाए रखने की क्षमता ने पाकिस्तानी घुसपैठ को परास्त किया। "जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान" का नारा देकर उन्होंने रक्षा, कृषि और विज्ञान को समान महत्व दिया। बुनियादी ढांचे में स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना ने प्रमुख शहरों को जोड़ा, आर्थिक विकास को गति दी। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना ने ग्रामीण क्षेत्रों को मुख्यधारा से जुड़ने का माध्यम प्रदान किया, जिससे गाँवों में समृद्धि और रोजगार के अवसर बढ़े। ये परियोजनाएं क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने और समावेशी विकास की मिसाल बनीं।

दूरसंचार क्षेत्र में अटल जी की न्यू टेलीकॉम पॉलिसी क्रांतिकारी साबित हुई। लाइसेंस शुल्क की जगह राजस्व साझेदारी मॉडल अपनाकर टेलीकॉम सेवाएं सस्ती और व्यापक हुईं, जिससे मोबाइल और इंटरनेट की पहुंच हर कोने तक हुई। सर्व शिक्षा अभियान ने शिक्षा को मजबूत आधार दिया, जबकि दिल्ली मेट्रो की शुरुआत ने शहरी परिवहन को नई दिशा प्रदान की। अंत्योदया योजना से गरीबों का उत्थान हुआ और विनिवेश नीति से अर्थव्यवस्था गतिशील बनी। इन प्रयासों ने भारत को वैश्विक निवेश का केंद्र बनाया। अटल जी की सोच में सुशासन का अर्थ था जनता के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना, जहां हर योजना का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। उनकी नीतियां आज भी ग्रामीण सशक्तिकरण की प्रेरणा देती हैं। सुशासन का मूल तत्व पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और जनभागीदारी है। अटल जी ने शासन को नोकरशाही की जटिलताओं से मुक्त कर जनता के निकट लाने का प्रयास किया। भ्रष्टाचार पर अंकुश और प्रशासनिक सुधार उनके एजेंडे का हिस्सा थे। आज "प्रशासन गाँव की ओर" थीम इसी विरासत को आगे बढ़ा रही है, जहां अधिकारी गाँवों में जाकर शिकायतों का निवारण कर रहे हैं और योजनाओं का संतुष्टि सुनिश्चित कर रहे हैं। डिजिटल इंडिया जैसे कार्यक्रम तकनीक से पारदर्शिता बढ़ा रहे हैं, सेवाएं घर तक पहुंचा रहे



हैं। सुशासन में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसे आधारभूत क्षेत्रों का विकास अनिवार्य है। अटल जी ने सिखाया कि शासन की सफलता नीतियों के क्रियान्वयन और जनता के विश्वास में निहित है। 2025 का सुशासन सप्ताह 19 से 25 दिसंबर तक "प्रशासन गाँव की ओर" थीम पर आयोजित हो रहा है, जो ग्रामीण भारत की समस्याओं को प्राथमिकता देता है। जनशिकायत निवारण, सेवा

वितरण और पंचायती राज को मजबूत करने पर फोकस है। अभी भी भ्रष्टाचार, संसाधनों का असमान वितरण और योजनाओं का धीमा क्रियान्वयन चुनौतियाँ हैं। इनके समाधान के लिए तकनीकी नवाचार, विधिक सुधार और नागरिक जागरूकता आवश्यक है। सरकार और समाज के सामूहिक प्रयास से ही सुशासन साकार होगा। अटल जी की विचारधारा हमें याद दिलाती है कि

विकसित भारत का सपना ग्रामीण सशक्तिकरण से ही पूरा होगा। इस दिवस पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे और पारदर्शी शासन में योगदान देंगे।

सुशासन दिवस श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की अमर विचारधारा का सशक्त प्रतीक है, जिसने राष्ट्रनिर्माण को नैतिकता, संवेदनशीलता और दूरदर्शिता की दृढ़ आधारशिला प्रदान की। शांति, समानता और सर्वांगीण विकास के उनके आदर्श आज भी समय की कसौटी पर खरे उतरते हैं। गठबंधन राजनीति की जटिल चुनौतियों के मध्यस्थता और प्रगति का मार्ग प्रज्वलित रखकर उन्होंने सिद्ध किया कि संवाद, सहमति और सहयोग से बढ़कर कोई राष्ट्रहित नहीं होता। उनकी कविताओं की प्रेरणा हमें सिखाती है कि निराशा के अंधकार में आशा का दीप प्रज्वलित रहे और कठिन परिस्थितियों में भी मुस्कान के साथ आगे बढ़ने का साहस बना रहे। यह दिवस स्मरण करता है कि विषम परिस्थितियों के अंधकार में भी आशा का दीप प्रज्वलित रखकर आगे बढ़ना ही अटल जी की सच्ची विरासत है। एक सशक्त, समृद्ध और समावेशी भारत निर्माण ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है; उनके सपनों को साकार करते हुए ग्रामीण भारत को सशक्त बनाना राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य की आधारभूमि है।

अटल बिहारी वाजपेई जी के जन्म शताब्दी वर्ष 25 दिसंबर पर विशेष काव्य रचना।

<p>भारत पर 'सदैव अटल'</p> <p>राष्ट्रवाद की अलख जगा कर, वह चले 'पाञ्चजन्य' का शंखनाद करके 'राष्ट्रधर्म' व 'स्वदेश' के मंथन में लगे रहे, पूरा जीवन उनका रहा भारत पर 'सदैव अटल...।'</p> <p>उन्होंने भारत के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दिखाया, राष्ट्र को समर्पित जीवन रहा सदा उनका दूरदर्शी सोच और कवि हृदय में भी भारत सबसे पहले, नये भारत के नव निर्माण में वह थे 'सदैव अटल...।'</p> <p>'आत्मनिर्भर भारत' के सजग प्रहरी, विश्व गुरु का मान बढ़ाया, सुशासन के सिध्दांतों को उन्होंने देश में करके दिखाया, राष्ट्र निर्माण की इस वेदी पर उन्होंने हिन्दी का मान बढ़ाया,</p>	<p>भारत पर वह और उनके विचार हैं अमर, क्योंकि वह है 'सदैव अटल...।'</p> <p>मातृभूमि पर आँख दिखाते वालों को उन्होंने बहुत समझाया, तभी तो भारत को परमाणु शक्ति का उन्होंने बल दिलाया</p> <p>'स्वर्णिम चतुर्भुज' प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना से देश को आगे बढ़ाया, एक स्वयंसेवक, जनसंघ से जुड़ कर देश के प्रधानमंत्री रहे, जो 'सदैव अटल...।'</p> <p>उन्होंने हमेशा कहा कि हो कुछ भी हार नहीं मानूंगा, उनके इस कर्तव्य बोध से हम सभी कुछ सीखें। नई पीढ़ी ऐसे राष्ट्र पुरुष व कर्मयोगी का जीवन पढ़े, जिन्होंने अपना सब कुछ भारत माता के चरणों में समर्पित कर दिया, और जो रहे 'सदैव अटल...।'</p> <p style="text-align: right;">स्वरचित रचना रचनाकार हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्य-प्रदेश</p>
---	--

इसरो का ड्रॉग पैराशूट, जिसका रेल की पटरी पर किया गया सफल ट्रायल

गगनयान मिशन की सुरक्षा के लिए अहम 'ड्रॉग पैराशूट' का सफल परीक्षण कर इसरो ने बड़ी कामयाबी हासिल की है। यह सफलता देश के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन को भरोसेमंद और सुरक्षित बनाने की दिशा में निर्णायक कदम बताया जा रहा है। 18-19 दिसंबर 2025 को चंडीगढ़ में ये परीक्षण टर्मिनल बैलिस्टिक रिसर्च लेबोरेटरी यानी टीबीआरएल की रेल ट्रैक रॉकेट स्लेज (आरटीआरएस) पर किया गया।



गगनयान कू माँड्यूल विकास के लिए ड्रॉग पैराशूट का यह क्वालिफिकेशन टेस्ट है। यह परीक्षण गगनयान कू माँड्यूल के डिसेलेंडेशन सिस्टम यानी गति को कम करने वाले सिस्टम को विकसित करने के लिए किए गए। गगनयान कू माँड्यूल में 4 तरह के कुल 10 पैराशूट शामिल हैं। जानकारी के अनुसार इसका मकसद मुश्किल परिस्थितियों में भी ड्रॉग पैराशूट को विश्वसनीयता बनी रहे और सफलतापूर्वक कू मेंबर्स टचडाऊन कर सकें, इसके लिए की गई है। इस दौरान ये भी सामने आया कि उड़ान की स्थितियों में बदलाव के बावजूद पैराशूट मजबूत और सक्षम था। इसमें डीआरडीओ, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र और एरियल डिलीवरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट ने अहम योगदान दिया है।

भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी 2026 में बिना कू वाले गगनयान मिशन के पहले लॉन्च की तैयारी कर रही है। केन्द्रीय मंत्री जितेन्द्र सिंह ने एक्स पर ट्वीट कर कहा कि भारत मानव स्पेस मिशन की दिशा में एक कदम और बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि इसरो ने 18-19 दिसंबर 2025 को चंडीगढ़ में टीबीआरएल की आरटीआरएस फेंसिलिटी में गगनयान कू माँड्यूल के लिए ड्रॉग पैराशूट डिप्लॉयमेंट क्वालिफिकेशन टेस्ट सफलतापूर्वक पूरे किए हैं। उन्होंने कहा कि इन टेस्टों ने अलग-अलग फ्लाइट कंडीशंस में ड्रॉग पैराशूट के परफॉर्मेंस और भरोसेमंद होने की पुष्टि करती है। यह भारत के मानव अंतरिक्ष उड़ान मिशन के लिए पैराशूट सिस्टम को क्वालिफाई करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

ड्रॉग पैराशूट छोटे कॉनिकल रिबन तरह की पैराशूट होती है, जिनका व्यास 5.8 मीटर होता है। ये कू माँड्यूल के पृथ्वी पर उतरने से पहले काम करने वाले पैराशूटों में से है। इन्हें पायरो-आधारित उपकरणों (मॉर्टर) के भीतर पैक किया जाता है, जो कमांड मिलने पर इन्हें बाहर निकालते हैं।

ड्रॉग पैराशूट अंतरिक्ष यान को पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करने पर उसकी गति को कम करता है और उसे स्थिर करता है, ताकि बाद में मेन पैराशूट पूरी तरह सुरक्षित खुल सके और अंतरिक्ष यान की गति को और कम किया जा सके। ये प्रक्रिया अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षित लैंडिंग के लिए बेहद जरूरी है। किसी भी अंतरिक्ष यान के लिए ये प्रक्रिया सबसे जटिल मानी जाती है।

गगनयान कू माँड्यूल को डिसेलेंडेशन सिस्टम में चार अलग-अलग तरह के कुल 10 पैराशूट हैं। शुरुआत दो 'एपेक्स कवर सेपरेशन' पैराशूट से होती है। ये सबसे पहले पैराशूट कमांटमेंट के सुरक्षा कवच को अलग करते हैं।

इसके बाद दो ड्रॉग पैराशूट आते हैं जो समूचे हूप माँड्यूल को स्थिर करने और उसकी स्पीड को सुरक्षित लेवल तक कम करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

एक बार जब ड्रॉग अपना काम पूरा कर लेते हैं, तो सीक्वेंस में तीन पायलट पैराशूट बाहर निकलते हैं। ये पायलट फिर तीन बड़े मेन पैराशूट निकालते हैं, जो कू माँड्यूल की वेलोसिटी को और कम करते हैं ताकि मिशन में सवार एस्ट्रोनॉट्स के लिए सुरक्षित टचडाऊन यानी जमीन या समुद्र में उतरना सुनिश्चित किया जा सके। ड्रॉग पैराशूट खास तौर पर बहुत जरूरी होते हैं क्योंकि इन्हें अंतरिक्ष यान के वायुमंडल में घुसने के तुरंत बाद काम करना होता है। ये बहुत डायनामिक फेज होता है, जहाँ एयरोडायनामिक लोड और फ्लाइट की स्थिति दोनों में काफी बदलाव होते हैं।

जानकारी के अनुसार इस परीक्षण का मकसद बहुत ज्यादा और असामान्य स्थितियों में ड्रॉग पैराशूट के परफॉर्मेंस, विश्वसनीयता और मजबूती को अच्छी तरह से वेरिफाई करना था। आरटीआरएस-आधारित दोनों ट्रायल ने सभी तय लक्ष्यों को पूरा किया। इससे यह साबित हुआ कि सिस्टम फ्लाइट पैरामीटर में बड़े बदलावों को झेल सकता है और सफलतापूर्वक काम कर सकता है।

रेल की पटरीयों पर हम अंतरिक्ष की सैर की कल्पना भी नहीं कर सकते लेकिन इसरो ने इसे सब कर दिखाया है। मिशन गगनयान के सबसे मुश्किल प्रक्रिया में से एक कू माँड्यूल के धरती में प्रवेश करने के दौरान अपनाने वाली प्रक्रिया को सफलतापूर्वक करना।

रेल ट्रैक रॉकेट स्लेज का उपयोग करना इसरो की इंजीनियरिंग सूझबूझ को दर्शाता है। ये सफलता बताती है कि भारत अपने पहले मानव मिशन की दिशा में तकनीकी तौर पर तेजी से बढ़ रहा है, साथ ही ये भी सुनिश्चित कर रहा है कि सुरक्षा मानकों पर 100 फीसदी खाता उतरे। इसरो ने टेस्ट के सफल समापन को गगनयान पैराशूट सिस्टम को मानव अंतरिक्ष उड़ान के लिए क्वालिफाई करने की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम बताया जा रहा है।

क्रिसमस: सामाजिक समता और बंधुता का जीवंत संदेश

बाबूलाल नागा

त्योहार हमारे सामाजिक जीवन को प्रतिबिंबित करते हैं। वे विभिन्न वर्ग और मतवालों में आपसी सौहार्द और भाईचारे को मजबूत भी देते हैं। क्रिसमस या बड़ा दिन भी एक ऐसा ही त्योहार है, जो प्रभु यीशु के जन्म के संबंध में मनाया जाता है। क्रिसमस का त्योहार न केवल ईसाई समुदाय के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह पूरे विश्व के लिए एक संदेश लेकर आता है—प्रेम, शांति, और सामाजिक समता का। यह त्योहार हमें अपने मतभेदों को भुलाकर एक-दूसरे के साथ जुड़ने और समाज में बंधुता को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करता है।

25 दिसंबर केवल एक धार्मिक पर्व नहीं बल्कि मानव सभ्यता के लिए एक गहरे सामाजिक और नैतिक संदेश का दिन है। क्रिसमस, ईसा मसीह के जन्म की स्मृति का पर्व, हमें यह याद दिलाता है कि प्रेम, करुणा, समता और बंधुता ही किसी भी समाज की असली नींव होते हैं। आज जब दुनिया असमानता, धृणा, युद्ध, जाति-धर्म के संघर्ष और आर्थिक विषमता से जूझ रही है, तब क्रिसमस का संदेश और भी प्रासंगिक हो उठता है।

ईसा मसीह का जन्म किसी राजमहल में नहीं बल्कि एक साधारण गौशाला में हुआ। यह स्वयं में एक प्रतीक है—कि ईश्वर का संदेश सत्ता, वैभव या ऊंच-नीच से नहीं बल्कि साधारण जन के बीच से निकलता है। ईसा का पूरा जीवन इसी विचार का विस्तार है। उन्होंने समाज के हाशिये पर खड़े लोगों—गरीबों, रोगियों, पाप कहे जाने वालों, रिक्तियों और शोषितों को गले लगाया। यह उस दौर में क्रांतिकारी विचार था, जब

समाज वर्गों और विशेषाधिकारों में बंटा हुआ था।

ईसा मसीह का सबसे बड़ा संदेश था—“सभी मनुष्य ईश्वर की संतान हैं।” यह वाक्य सामाजिक समता की नींव है। इसमें न कोई जाति है, न रंग, न भाषा, न धर्म और न ही आर्थिक हैसियत। आज समाज में, जहां असमानता की खाई लगातार गहरी हो रही है, क्रिसमस हमें चेताना है कि विकास तब तक अधूरा है जब तक अंतिम व्यक्ति तक सम्मान और अवसर न पहुंचे।

भारत जैसे देश में, जहां संबिधान समानता की बात करता है लेकिन सामाजिक यथार्थ अब भी भेदभाव से ग्रस्त है, वहां क्रिसमस का संदेश हमें आत्ममंथन के लिए मजबूर करता है। क्या हम सच में समानता के मूल्यों को जी रहे हैं या केवल उत्सवों तक सीमित कर चुके हैं? ईसा मसीह का जीवन हमें कर्म के स्तर पर समानता उपलब्ध कराता है।

क्रिसमस का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है—बंधुता, यानी आपसी भाईचारा। ईसा ने कहा था—“अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।” यह केवल नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि सामाजिक दर्शन है। आज जब समाज में नफरत, अविश्वास और हिंसा बढ़ रही है, तब बंधुता का यह विचार अत्यंत जरूरी हो जाता है।

बंधुता का अर्थ है—दूसरे के दर्द को अपना समझना, उसकी पीड़ा के प्रति संवेदनशील होना। क्रिसमस के अवसर पर गरीबों को भोजन क्वाना, बेसहारा बच्चों को उपहार देना, बीमारों पर खड़े लोगों—गरीबों, रोगियों, पाप कहे जाने वालों, रिक्तियों और शोषितों को गले लगाया। यह हमें सिखाती है कि समाज केवल कानूनों से नहीं,



बल्कि मानवीय संवेदनाओं से चलता है।

आज क्रिसमस विश्वभर में एक वैश्विक उत्सव बन चुका है। चर्चों की चिंगियां, रोशनी से सजे घर, कैरोल गीत और सांता क्लाउज—ये सब उत्सव का हिस्सा हैं। लेकिन इसका मूल उद्देश्य केवल आनंद नहीं बल्कि आत्मा की शुद्धि और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध है। यदि क्रिसमस केवल उपहारों और सजावट तक सीमित रह जाए, तो उसका असली संदेश खो जाता है। ईसा का जीवन त्याग, संघर्ष और सेवा का जीवन था। उन्होंने सत्ता से टकराने का साहस किया, अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई और प्रेम को हथियार बनाया। यही कारण है कि क्रिसमस हमें सवाल पूछने के लिए प्रेरित करता है—क्या हम अन्याय के सामने चुप हैं या ईसा की तरह सच के साथ खड़े हैं?

आज का दौर तकनीक और उपभोग का दौर है। रिश्ते कमजोर हो रहे हैं, संवेदनाएं सिमट रही हैं और ईसान अकेला होता जा रहा है। ऐसे समय में क्रिसमस हमें रुककर सोचने का अवसर देता है। यह हमें याद दिलाता है कि ईसान की असली सफलता उसकी ईसाइयत है, न कि उसकी पहचान पत्र।

जब हम समता की बात करते हैं तो हमें

शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सम्मान की समान पहुंच सुनिश्चित करनी होगी। जब हम बंधुता की बात करते हैं, तो हमें धर्म, जाति और विचारधारा से ऊपर उठकर संवाद और सहयोग को बढ़ावा देना होगा। क्रिसमस इन दोनों मूल्यों को एक साथ जोड़ता है।

क्रिसमस केवल रोशनी का पर्व नहीं, बल्कि जिम्मेदारी का संदेश है। यह हमें बताता है कि समाज में हर अंधेरा दूर किया जा सकता है, बशर्ते हम प्रेम और करुणा की लौ जलाए रखें। ईसा मसीह का जीवन इन बात का प्रमाण है कि एक अकेला व्यक्ति भी अपने विचारों से पूरी दुनिया को बदल सकता है।

25 दिसंबर हमें यह संकल्प लेने का दिन है कि हम अपने आसपास फैली असमानता, धृणा और उदासीनता के खिलाफ खड़े होंगे। हम एक ऐसे समाज की ओर बढ़ेंगे जहां समता केवल शब्द न हो, बल्कि व्यवहार बने, और बंधुता केवल भावना न हो, बल्कि सामाजिक संस्कृति बने। यही ईसा मसीह के जीवन का सार है और यही क्रिसमस का सच्चा अर्थ।

क्रिसमस सिर्फ एक धार्मिक त्योहार नहीं बल्कि एक सार्वभौमिक संदेश है जो हमें एक-दूसरे के प्रति दयालु, सम्मानजनक और सहयोगी बनने की प्रेरणा देता है और एक ऐसे समाज का निर्माण करने का आह्वान करता है जहां हर कोई प्यार, उत्सव और समानता से जी सके। क्रिसमस का सम्मान तभी सार्थक होगा, जब वह केवल पर्व न रहकर मानवता का सार्वजनिक संकल्प बने। आइए, हम इस पहचान को मनाएं और समाज में समता, बंधुता, और प्रेम को बढ़ावा दें।

(लेखक भारत अपडेट के संपादक हैं)

छूटी हुई पाठशाला (कहानी)



- डॉ. प्रियंका सौरभ

मिट्टी की उन पगडंडियों पर, जहाँ सुबह-सुबह धूप भी संकोच से उतरती है, एक छोटी-सी लड़की आज फिर घर की देहरी पर रुक गई। उसका नीला-सा फीका पड़ चुका स्कूल-फ्रॉक, जैसे हर रोज उससे पूछता हो—“चलें?” और चौखट पर खड़ी माँ की आँखें, खाली बर्तनों और अधूरे कामों की तरफ इशारा करके जवाब दे देती हैं—“आज नहीं, अभी नहीं।” किताबें उसके बैग में नहीं, मन में बजते किसी दूर के गीत की तरह रखी हैं, पर उस गीत की आवाज, बर्तन टकराने की खगखनाहट और चूल्हे के धुएँ में हर रोज कुछ और कम हो जाती है।

कभी-कभी वह अपनी ही छाया को देखती है—सोचती है, अगर यह छाया कक्षा की दीवार पर पड़ती, ब्लैकबोर्ड के सामने खड़ी होती, तो कितना अच्छा होता। खड़िया से लिखते-लिखते उंगलियाँ सफेद हो जातीं, और वह अपने नाम के नीचे भविष्य का कोई अदृश्य वाक्य पूरा कर पाती। पर उसके नाम के साथ गाँव की बैठकों में सिर्फ दो शब्द जुड़े हैं—“क्यों पढ़ाना?” यह प्रश्न नहीं, एक फंसला है—ये सब किस जन्म से पहले ही किसी पुरानी बैठक में कर लिया गया था।

उसकी सहेली सुबह-सुबह साइकिल पर स्कूल जाती है, उसके सिर पर गुँथा हुआ जूड़ा, हवा में थोड़ा डोलता है और बालों के बीच से झाँकती एक छोटी-सी टिकटुली, किसी नए रास्ते का नक्शा लगती है। वह उसे जाती देखती है, फिर अपनी हथेलियों पर जमे आटे को देखती है, जैसे किसी ने उसकी उँगलियों को अक्षरों की जगह रोटियों के गोल आकार तक सीमित कर दिया हो। घर के आँगन में पसरा हुआ कपड़ों का ढेर, रोते हुए छोटे भाई की आवाज, और रसोई से आती माँ की पुकार—ये सब मिलकर उसकी किताबों के पन्नों को धीरे-धीरे बंद कर देते हैं, जैसे किसी कविता की आखिरी पंक्ति बिना बोले ही अधूरी छोड़ दी गई हो।

शाम को जब गाँव की पगडंडियों पर धूल बैठने लगती है, तो स्कूल से लौटते बच्चों की आवाजें हवा में तैरती हैं—“मैडम ने आज नया चैप्टर शुरू करवाया”, “कल टेस्ट है”, “माक्स कम आरू तक पढ़ाई है।” वह अनजाने ही मुस्करा देती है; उसे टेस्ट से नहीं डर लगता, उसे तो उस दिन से डर लगता है जब उसकी किताबों पर हल्दी लगा दी जाएगी और कहा जाएगा—

“अब इसे संभाल कर रख दो, तुम्हें जल्दी ही किसी और घर जाना है।” उसके लिए रिपोर्ट-कार्ड नहीं बनता, उसके लिए कोई रजिस्टर में ड्रॉपआउट की टंडी लाइन भर दी जाती है—एक और नाम, जो आँकड़ों में दर्ज होकर भी कहानियों से गायब हो जाता है।

कभी-कभी रात को छत पर लेटे-लेटे वह आसमान के तारों को जोड़कर देखती है—सोचती है, क्या कोई तारा ऐसा है जो सिर्फ लड़कियों के नाम से चमकता हो? उसे याद है। एक बार टीचर ने कहा था—“बेटा, पढ़ाई तुम्हारी किस्मत बदल सकती है।” उस दिन उसे लाला था कि किस्मत कोई ताला है, जिसकी चाबी उसके बस्ते में रखी हुई है। पर अब गाँव की चौपाल में, रिश्तों की बातचीत के बीच, वही ताला किसी और के हाथ में चला गया है—जहाँ चाबी की जगह दहेज की सूचियाँ और ऊँची-नीची जातीय दीवारें खनकती हैं।

उसकी आँखों में कभी-कभी एक अजीब-सी रोशनी कौंध जाती है—जब वह पड़ोस की किसी दीदी को कॉलेज जाते देखती है, जो स्कूटी पर बैठकर, किताबों से भरा बैग पीठ पर लटकाने, धूल उड़ती हुई निकलती है। उस क्षण उसे लगता है कि शायद कहीं कोई रास्ता है जो उसके घर से भी निकलता है, सिर्फ शादी के बाद तक नहीं, कॉलेज की सोइयों तक भी जाता है। पर अगले ही पल, बच्चों से गुजरती फुसफुसाहट—“ज्यादा पढ़ाओगे तो कौन करेगा शादी?”, “लड़की को इतना खुला मत छोड़ो”—उस रास्ते पर कैंटीली झाड़ियाँ उगा

देती हैं।

उसके सपने बहुत बड़े नहीं हैं; वह बस इतना चाहती है कि उसके नाम के साथ “कक्षा 10 उतीर्ण” लिखने की जगह “बालिका-विवाह” की तारीख न जुड़ जाए। वह चाहेती है कि उसकी माँ उसे यह कहते हुए देख सके—“मुझे अपने बच्चों को तुमसे ज्यादा पढ़ाना है।” वह जानती है कि शिक्षित माँ की आँखों में भविष्य का जो उजाला होता है, वह मिट्टी के तेल के दीये में नहीं, बिजली की टिमटिमाती ट्यूब में ही दिखता है। पर इस समय, उसके घर में जलती लौ सिर्फ रसोई के चूल्हे में है, जहाँ उसका बचपन रोज-रोज धीमी आँच पर पकता रहता है।

गाँव के स्कूल की दीवार पर लिखा है—“बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ।” वह रोज उस नारे के पास से गुजरती है, जैसे कोई आईना हो जो उसे आधा दिखाता है—बचाव तो गई है, पढ़ाई नहीं गई। उसे लगता है, यह चार शब्द सिर्फ दीवार पर नहीं, उसके हृदय पर भी लिखे जाने चाहिए थे—ताकि जब भी कोई उसके हाथ से किताब छीनने आए, तो वह उन्हें जोर से पढ़ सके। पर अभी तो उसकी आवाज भी बहुत धीरे निकलती है, जैसे कोई बच्चा पहली बार वर्णमाला सीखते समय हकला रहा हो।

और फिर भी, इस सारी धूल और धुएँ के बीच, एक छोटी-सी जिनट उससे रोज नए सिरों से जन्म लेती है। वह जब पड़ोस की चाची के मोबाइल पर किसी लड़की का भाषण देखती है—जो मंच से कह रही होती है कि “हम भी डॉक्टर, टीचर, अफसर बन सकते हैं”—तो उसे

लगता है, यह 'हम' शब्द उसके लिए भी है, सिर्फ शहरों की लड़कियों के लिए नहीं। शायद किसी दिन वह भी किसी फार्म पर दस्तखत करते हुए लिखे—“शैक्षणिक योग्यता: बारहवीं पास”—और उस वक्त उसके गाँव की हवा में एक अदृश्य, मगर जरूरी बदली हुई गंध तैर जाए।

उसकी कहानी अकेली नहीं; हर सुबे, हर जिले, हर बस्ती में ऐसी अनगिनत आँखें हैं, जो आधा स्कूल और आधा घर देखते-देखते बड़ी हो जाती हैं। आँकड़ों की फाइलों में उन्हें “ड्रॉपआउट” कहा जाता है, पर सच यह है कि वे खुद नहीं गिरीं, उन्हें धकेला गया—कभी शौचालय की कमी ने, कभी लंबी दूरी ने, कभी घरेलू बोझ ने, कभी बाल विवाह की रस्मों ने। इन सारी शक्तियों के बीच, वह लड़की अब भी कहीं भीतर से फुसफुसाती है—“मैं गिरना नहीं, उड़ना चाहती थी।”

शायद आने वाले समय में, कोई एक माँ, कोई एक पिता, किसी एक सुबह सिर्फ इतना निर्णय ले ले कि आज बेटी की हथेली पर आटा नहीं, कलम लगेगी; आज उसकी चोटी में सिर्फ रिबन नहीं, आत्मविश्वास की पतली-सी डोरी भी बँधेगी। उस दिन गाँव के रास्ते पर एक और लड़की साइकिल से स्कूल जाएगी—धूल उड़ती रहेगी, पर इतिहास को दिशा थोड़ी-सी बदल चुकी होगी। और तब, किसी दीवार पर लिखा नारा पहली बार सच्चाई जैसा लगेगा, सिर्फ रंगी हुई पेंटिंग नहीं—“बेटी पढ़ेगी, तभी तो देश आगे बढ़ेगा।”



